Marwari College, Darbhanga.
Online lecture, Study Material

Page No.: 1
Date : 28/04/20

Subject- Psychology (Hons), B.A. Part-I
Paper-II (Social Psychology)
Ch. Title- Groups:
Topic- Group Structure and Function
(समूह - संरचना और कार्य)

मनुष्य का जीवन वास्तव में सामूहिक जीवन है। मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहने का तात्पर्य भी यही है कि वह समूह में रहता है। प्रत्येक व्यक्ति का जन्म समूह में ही होता है एवं समूह के माध्यम से ही वह अपनी आवश्यकता की पूर्ति एवं पूर्ति करने के तरीके को सीखता है। इस तरह मनुष्य का जीवन समूह (जैसे- परिवार) की सदस्यता से शुरू होता है, जो समूहों का अध्ययन करता है।

समूह के लिए एक शर्त यह है कि सहयोगी सामाजिक संबंधों को ही प्राथमिकता देंगे, अगर संघर्ष दिखायी पड़ने लगे तो उसे समूह की जगह समाज कहना सही होगा।

समूह तथा सामाजिक समूह में अंतर
समूह शब्द का प्रयोग हम व्यक्तियों के संग्रह के लिए करते हैं, लेकिन सामाजिक समूह में सामाजिक अन्तःक्रिया (Social interaction) या सामाजिक संबंध (Social relationship) का होना आवश्यक है।

Group Structure is defined as the layout of a group. It is a combination of group roles, norms, conformity, workplace behaviour, status

Scanned with CamScanner

reference groups, Status, Social loafing, cohorts, group demography and cohesiveness. Group Roles - The different roles a person plays as a part of the group.

Structure of Group:

Kretch and Crutchfield के अनुसार किसी समूह की संरचना का अध्ययन उसके निम्नलिखित तत्वों के आधार पर किया जा सकता है -

1. Size of the Group:
2. Individual's role within the group:
3. Group relations:
4. Sociometric Profile
5. Relationship among Social organisations:

Functions of Group:

समूह के मुख्य कार्य निम्नलिखित बताये जा सकते हैं -

1. आवश्यकताओं की पूर्ति होना:
2. सुरक्षा की भावना:
3. व्यक्ति का समाजीकरण:
4. Group Norms:
6. Group Culture:
7. Many public works:

Conclusion:

Dr. S. K. Suman
20/4/20
Assistant Professor
Dept. of Psychology
Marwari College, Darbhanga

Scanned with CamScanner

Q.5. समूह की बनावट तथा कार्यों का वर्णन करें।
(Describe the structure and functions of Group.) P-03 Page-03

Ans. समूह का निर्माण विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। अत: इसकी बनावट एक प्रकार की नहीं होती। इस प्रकार भिन्न-भिन्न समूह के व्यक्तियों के व्यवहारों में भिन्नता का कारण समूह की संरचना है। क्रेच तथा क्रचफिल्ड (Kretch and Crutchfield) के अनुसार, किसी समूह की संरचना का अध्ययन उसके निम्नलिखित तत्वों के आधार पर किया जा सकता है—

1. समूह का आकार (Size of the Group)
2. समूह में व्यक्ति का कर्तव्य या भूमिका (Individual's role within the Group)
3. समूह सम्बन्ध (Group Relations)
4. समाजमितिक रूपरेखा (Sociometric Profile)
5. सामाजिक संगठनों के बीच सम्बन्ध (Relationship among Social Organizations)।

इनका विस्तृत विवरण निम्न रूप में दिया जा सकता है—

1. समूह का आकार (Size of the Group) : समूह का आकार बड़ा या छोटा हो सकता है। जब समूह छोटा होता है तो उसकी संरचना या बनावट सरल होती है, परन्तु जब समूह बड़ा होता है तो उसकी संरचना जटिल होती है। सबसे छोटे आकार का समूह दो व्यक्तियों का होता है, जैसे—पति-पत्नी, मालिक-नौकर का समूह। इन दोनों के बीच आपसी सम्बन्ध बनता है। जब व्यक्तियों की संख्या तीन हो जाती है तो छः तरह के सरल सम्बन्ध हो सकते है और चार सदस्यों के समूह में पच्चीस प्रकार का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। इसी प्रकार जैसे-जैसे समूह का आकार बड़ा होता जायेगा सरल तथा जटिल सम्बन्धों की संख्या बढ़ती जायेगी।

2. समूह में व्यक्ति का कर्तव्य या भूमिका (Individuals role within the Group) : प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी समूह का सदस्य होता है और सदस्य होने के नाते उसे कुछ भूमिका अदा करनी पड़ती है। व्यक्ति अपने समूह के दूसरे सदस्यों के साथ कैसा

Scanned with CamScanner

बर्ताव करेगा यह सब व्यक्ति के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। व्यक्ति को अन्य व्यक्ति किस रूप में देखते हैं और उसके प्रति कैसा व्यवहार करते है यह भी व्यक्ति द्वारा संपादित भूमिका पर निर्भर करता है। समूह के सदस्यों की कोई पूर्व निश्चित धारणा नहीं होती है। प्रत्येक सदस्य बहुत कुछ अपनी इच्छानुसार कार्य करता है। इस तरह से स्पष्ट है कि समूह की संरचना सदस्यों की भूमिका पर भी आधारित रहती है। P-01

3. समूह सम्बन्ध (Group Relations) : समूह सम्बन्ध का तात्पर्य समूह के सदस्यों के बीच आपसी सम्बन्ध से है। यह समूह के आकार पर निर्भर करता है। जब समूह का आकार छोटा होता है (यानी 4-5 सदस्यों का समूह होता है) तो इनके सदस्यों के बीच सम्बन्ध काफी घनिष्ट तथा प्रत्यक्ष होता है। बड़े समूह की एक सबसे बड़ी विशेशता यह है कि वह प्राय: समरूप नहीं होता है। बल्कि छोटे-छोटे उपसमूहों में विभक्त होता है। इनके बीच दो तरह का संबंध देखने को मिलता है—(क) लम्बीय, तथा (ख) आधारीय। कुछ उपसमूह ऐसे होते है जो शक्ति तथा पद की दृष्टि से एक अनुक्रम में बँधे होते है।

4. समाजमितिक रूपरेखा (Sociometric Profile) : समाजमिति का प्रतिपादन मोरेनो (Moreno) ने 1934 ई० में किया था। इसमें समूह संरचना का अध्ययन अपनी पसंदगी और नापसंदगी के आधार पर किया गया है।

इस प्रविधि में किसी समूह के प्रत्येक सदस्य से गुप्त रूप से यह पूछा जाता है कि वह किन-किन सदस्यों को पसन्द करता है तथा किन-किन को नापसंद। इसके आधार पर पसंदगी तथा नापसंदगी के आधार पर एक विशेष चित्र तैयार किया जाता है जिसे समाज-आलेख (Sociogram) कहते है।

5. सामाजिक संगठनों के बीच सम्बन्ध (Relationship among social organization) : किसी भी देश में बहुत से सामाजिक संगठन होते हैं जिनके द्वारा समूह की संरचना निर्धारित होती है। प्रत्येक संगठन के आदर्श दूसरे संगठनों को प्रभावित करते है। इस तरह विभिन्न संगठन भी विभिन्न सामाजिक समूहों की बनावट को प्रभावित करते है।

समूह के कार्य (Functions of Group) : इसके लिए आगे का प्रश्न देखें।

Q.6. सामाजिक समूह के स्वरूप की व्याख्या करें तथा इसकी कार्यप्रणाली का वर्णन करें। (Explain the nature of Social group and describe its functions.)

Or, समूह क्या है ? समूह के कार्यों का उल्लेख करें।

(What is Group ? Discuss its functions.)

Ans. सामाजिक समूह की परिभाषा ऑगबर्न और निमकॉफ ने निम्न शब्दों में दी है—"जब कभी दो या अधिक व्यक्ति एकत्र हो जाते हैं और एक-दूसरे पर प्रभाव डालते है तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते है।" *(Whenever two or more individuals come together and influence one another, they may be said to constitute a social group.)*

केवल व्यक्तियों के झुण्ड को ही समूह नहीं कहा जा सकता। समूह बनाने के लिए आवश्यक है कि वे एक-दूसरे पर प्रभाव डालें। इसी प्रभाव डालने वाली प्रक्रिया को मैकाइवर और पेज ने सामाजिक सम्बन्ध कहा है। इसके लिए दो आवश्यक तत्व अवश्य होना चाहिए—प्रथम, पारस्परिक सम्बन्ध या पारस्परिकता और द्वितीय, एक दूसरे के प्रति जागरूकता। पेड़ों के एक झुण्ड को, जिनमें शारीरिक निकटता तो पायी जाती है, परन्तु पारस्परिक जागरूकता द्वारा वे एक-दूसरे को प्रभावित नहीं करते, हम समूह नहीं बल्कि झुण्ड कहते है।

सामाजिक समूह के आवश्यक तत्व (Essential elements of Social Group) : एक सामाजिक समूह के निम्न आवश्यक तत्व होते हैं—(1) दो या अधिक व्यक्तियों का

Scanned with CamScanner

होना। (2) उन व्यक्तियों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्पर्क का होना। (3) उनके बीच कोई-न-कोई स्वार्थ या हित का होना। इस हित के कारण ही वे एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा करेंगे। P-05

समूह के कार्य (Functions of Group) : चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए वह अपना जीवन अकेला कभी नहीं व्यतीत कर सकता। समूह का सदस्य होने में व्यक्ति को अनेकों लाभ हैं। समूह के माध्यम से वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। समूह के मुख्य कार्य निम्नलिखित बताये जा सकते हैं—

1. आवश्यकताओं की पूर्ति होना : व्यक्ति की अपरिमित आवश्यकताएँ हैं। इनमें कुछ आवश्यकताएँ प्राथमिक (Primary) होती हैं और कुछ आवश्यकताएँ गौण (Secondary) होती है। इनमें प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं—भोजन, कपड़ा और मकान। इन आवश्यकताओं की पूर्ति मनुष्य किसी समूह का सदस्य होकर पूरा करता है। इसके अतिरिक्त गौण आवश्यकताओं की पूर्ति भी मनुष्य समाज का सदस्य होकर पूरी करता है। इस वर्ग में शिक्षा, मनोरंजन आदि आते हैं। जब प्राथमिक तथा गौण आवश्यकताओं की पूर्ति समूह में रहकर हो जाती है तो व्यक्ति नयी आवश्यकताओं का सृजन करता है। इन नयी आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् फिर अन्य आवश्यकतायें जन्म लेती है और इनकी पूर्ति के लिए वह समूह की सदस्यता कायम रखता है।

2. सुरक्षा की भावना : व्यक्ति अकेले में असहाय रहता है। समूह में उसकी सुरक्षा होती है। इस प्रकार व्यक्ति समूह में रहकर अपनी सुरक्षा प्राप्त करता है।

3. व्यक्ति का समाजीकरण : समूह में रहकर व्यक्ति समाजीकरण में प्रशंसनीय योगदान देते हैं। व्यक्ति में पूर्ण समाजीकरण करने का श्रेय समूह को दिया जा सकता है।

4. समूह के व्यक्तियों को नियंत्रित एवं सम्बन्ध बनाये रखने में मान्यताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इसलिए उन मान्यताओं का विकास किया जाता है जिन्हें प्रत्येक सदस्य अपने व्यवहारों में उतारता है।

5. समूह अपने सदस्य के बीच सांस्कृतिक निरन्तरता कायम रखता है। वह अपने अन्दर सांस्कृतिक तत्वों को समेट कर सुरक्षित रहता है।

6. अनेक सार्वजनिक कार्य, जैसे—अकाल, महामारी, बाढ़, दंगा आदि के समय में बचाव कार्य का सम्पादन समूह के द्वारा ही संभव होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समूह से व्यक्ति के जीवन में अनेक लाभ हैं जो अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

Scanned with CamScanner